सूरदास के पद

1) "आयो घोष बड़ो व्यापारी..... आन दिखावौ।"

प्रसंग:- उद्धव निर्गुण ब्रह्म की उपासना की शिक्षा देने के उद्देश्य से जब गोकुल आते हैं, तो गोपियां उन पर व्यंग करती हुई कहती है। कि वे योग साधना को तुच्छ समझती हैं। उनके मन में केवल कृष्ण प्रेम ही बसा है और उसी की वे उपासना करती हैं। प्रस्तुत कथन उद्धव को संबोधित करके कहीं गई है।

व्याख्या:- सगुणोपासना गोपियां उद्धव को अपने गांव में आया हुआ देखकर एक दूसरे से बात करते हुए कहती हैं कि हम अहीरों की बस्ती में एक बहुत बड़ा व्यापारी आया है। उसने ज्ञान और योग के गुणों का बोझ सिर पर लादा हुआ है। जिसे उसने ब्रजभूमि में आकर उतार दिया है। वह भूसा(अनाज का फटकन) देकर हमसे स्वर्ण मांग रहा है। हमें निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान देकर हमसे उसके दामस्वरूप कृष्ण प्रेम लेना चाहता है। अर्थात निर्गुण ब्रह्म उपासना को प्राप्त करने और कृष्ण प्रेम को छोड़ देने का बात कर रहा है। वह अपने को समझदार और यहां के लोगों को नितांत भोला समझता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस व्यापारी को मूल अर्थात आरंभ से ही हानि हुई है, इसलिए यह सिर पर भारी बोझ को लिए फिरता है। अर्थात लगता है इसका माल खोटा है। अन्यथा उसे न तो हानि होती और न सारा माल सिर पर उठाकर घूमना पड़ता। यहां ऐसा कौन अज्ञानी है, जो इसके कहने में आकर धोखा खाएगा। अर्थात गोकुल में ऐसा कोई अज्ञानी मूर्ख नहीं है जो इसके कहने में आकर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने लगेगा। ऐसा कौन है जो अपना दूध छोड़कर खारे पानी के कुएं का जल पिएगा। गोपियां कहती है कि उद्धव तुम यहां से सवेरे ही जल्दी चले जाओ और अधिक विलंब मत करो। तुम्हारा माल यहां बिकने वाला नहीं है।

सूरदास जी कहते हैं कि गोपियां उद्धव से कहने लगे कि यदि अपने साहूकार को यहां लाकर हमें उसका दर्शन करा दो तो मुंह मांगा मूल्य पाओगे।

2) "अखियां हरी दर्शन की भूखी .....सरिता हैं सूखी।"

प्रस्तुत कथन भ्रमरगीत सार से ली गई है। प्रस्तुत कथा गोकुल की सगुणोपासना गोपियों के द्वारा उद्धव के प्रति कहा गया है।

व्याख्या:- गोकुल की सगुणोपासना गोपियां उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव हमारी आंखें तो कृष्ण दर्शन की भूखी है। कृष्ण के रूप और प्रेम में पगी अर्थात रूप सुधा का पान करने वाली है। यह आंखें तुम्हारी रुक्ष अथवा नीरस बातों को सुनकर कैसे रह सकती है। कैसे सहन कर सकती है। कृष्ण जी के लौटने की प्रतीक्षा में अवधी को गिनती गिनती टकटकी लगाए, रास्ते को देखती हुई इतनी संतप्त नहीं हुई, जितनी तुम्हारे योग संदेश से व्याकुल और दुखी हो रही हैं। हे उद्धव एक बार पुनः हमें कृष्ण जी का वही मुख्य दिखाओ जो पत्ते के दोने में दूध पीता था। सूरदास कहते हैं कि गोपियां कहने लगी है कि यह सरिताएं सुखी हुई हैं। तुम रेत में नाव चलाने का हठ कर रहे हो, अर्थात गोपियों को निर्गुण ज्ञान देना रेत में नाव चलाने के समान है। कृष्ण प्रेम में पगे हुए हमारे हृदय पर तुम्हारी योग शिक्षा का प्रभाव पड़ना संभव नहीं है।

गोपियों के द्वारा कही गई प्रस्तुत कथन में एक विरोधाभास परिलक्षित होता है। आंखों का काम देखना होता है। भूख लगना तो उसका काम नहीं है। परंतु यहां गोपियां कहती है कि उनके आंखें हरी दर्शन के लिए अर्थात कृष्ण के दर्शन की भूखी है। इस कथन के माध्यम से गोपियां उद्धव के निर्गुण ज्ञान को खंडित करते हुए कृष्ण के सगुण रूप का दर्शन को ही अपने लिए महत्वपूर्ण मानती है।

3) "आली हो! कैसे .....पाछपद पसुहि।"

प्रस्तुत का धन भ्रमरगीत सार से ली गई है इस कथन में गोपियां कृष्ण स्वरूप का उल्लेख कर आपने अनन्य भक्ति भाव को व्यक्त करती है

एक गोपी कहती है कि तुम अली! अर्थात भ्रमर हो। हरि के रूप रस को कैसे कह सकते हो।अर्थात हे! उद्धव तुम कृष्ण के स्वरूप एवं प्रेम का वर्णन कैसे कर सकते हो? तुम तो निर्गुण ज्ञान के उपासक हो। तुम्हारे लिए कृष्ण का रूप -रस का वर्णन करना संभव ही नहीं है। मेरे शरीर के अंगों में बहुत भेद है। एक अंग केवल एक ही कार्य कर सकता है। अतः जिह्वा नेत्रों की

दशा नहीं जानती। अर्थात नेत्र जो कुछ देखते हैं उसे जिह्वा व्यक्त नहीं कर सकती। जिसने कृष्ण को देखा है वह वाणी रहित है। अर्थात वर्णन करने की शक्ति से वंचित है। और जो वर्णन कर सकती है उसने कृष्ण जी को नहीं देखा। सगुण रूप कृष्ण जी के यश का स्मरण कर नेत्र वाणी रहित होने के कारण उमंग और प्रेम जल से भर उठते हैं। अर्थात नेत्र कृष्ण जी का स्मरण कर अश्रुपूर्ण हो जाते हैं। यह देखकर मेरा मन बार-बार पश्चाताप करने लगता है। क्या किया जाए जब भाग्य पर किसी का वश नहीं है। अर्थात भाग्य हमारे पक्ष में नहीं है। अन्यथा हमें कृष्ण जी छोड़कर ही न जाते। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियां कहने लगी है कि शरीर के अंगों की प्रस्तुत दशा के पश्चात पद अर्थात भ्रमण को कौन समझा सकता है। कवि ने गोपियों के वाक्वैदग्ध्य का अद्भुत प्रदर्शन किया है। जिसे सुनकर उद्धव निरुत्तर हो जाते हैं।

4) "निर्गुण कौन देस को वासी"

प्रस्तुत कथन में सगुणॅपासना गोपियां निर्गुण ज्ञान के उपासक उद्धव का एवं निर्गुण का उपहास करती हुई सगुण भक्ति के प्रति अटूट आस्था प्रकट करती हैं।

गोपियां उद्धव से कहती हैं कि तुम जिस निर्गुण ज्ञान की चर्चा कर रहे हो जरा हमें बताओ तो तुम्हारा वह निर्गुण ब्रह्म किस देश का वासी है। हम अपने उपवास कृष्ण जी के निवास स्थान से परिचित है। क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा उपासक किस स्थान का रहने वाला है? उद्धव हमें यह प्रसन्नता पूर्वक जरा समझाओ, हम सौगंध देकर तुमसे एक सच्ची बात जानना चाहती हैं तुम जिस निर्गुण ब्रह्म की बात हमसे कर रहे हो उसके पिता कौन है? उसकी जननी कौन है? कौन नारी उसकी दासी है? उसका रूप रंग कैसा है? देश कैसा है और किस रस का अभिलाषी है? हे! उद्धव यदि कुछ कपट अथवा चुभने वाली बात कही तो तू अपने किए का फल पाएगा। सूरदास जी कहती है की गोपियों की बातों को सुनकर उद्धव मौन होकर ठगे से रह गए। और उनकी सारी मति नष्ट हो गई। अर्थात गोपियों के प्रश्न सुनकर उद्धव निरुत्तर हो गए और उनका बुद्धि गोपियों के प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ उनकी बुद्धि ने भी जवाब दे दिया।

गोपियों का उद्धव के प्रति निर्गुण ब्रह्म पर करारा व्यंग है। उद्धव गोपियों को जो पाठ पढ़ाना चाहते हैं उसके अक्षरों के रूप रंग उद्गम आदि से भी परिचित भी नहीं हैं। ब्रह्म रूप रंग आकार आदि से परे हैं।

गोपियां इन्हीं तत्वों को आधार मानकर उद्धव पर व्यंग प्रहार करती है। फिर जिसे वेद नहीं जान पाए बेचारे उद्धव कैसे जान सकते हैं। गोपियों का अद्भुत वाक्चातुर्य देखने को मिलता है।

4)" उधो! ब्रज की दशा विचारों।"

उद्धव गोपियों को जानोपदेश देने के प्रति दृढ़ संकल्प है। इस पर गोपियां उद्धव से अनुरोध करते हुए कहती हैं कि वे अपने योग का संदेश देने से पूर्व ब्रज की दशा, परिस्थिति एवं ब्रज वासियों की मनोदशा का भली प्रकार अवलोकन तो कर लें।

गोपियां कहती है कि हे उद्धव अपने ज्ञान का उपदेश देने से पूर्व जरा ब्रज की दशा का भली-भांति अध्ययन तो कर लो। इसके बाद सिद्धियां दिलाने वाली अपनी योग कथा का विस्तार पूर्वक वर्णन करना। ज्ञानोपदेश के लिए देश काल एवं पात्रों के औचित्य की परीक्षा कर लेना अपेक्षित है। जिस कारण नंदनंदन कृष्ण जी ने तुम्हें ब्रज में भेजा है उसे पहले मन में सोच लो। कहीं ऐसा तो नहीं कि कृष्ण जी ने तुम्हें हमारे पास प्रेम संदेश देने के लिए भेजा हो और तुम प्रेम के स्थान पर स्वकल्पनाश्रित योग की बातें सिखाने लगे। विरह और परमार्थ में कितना अंतर है। तुम इसे जानते हो या नहीं। इन दोनों में परस्पर विरोध एवं अत्यधिक अंतर है। और हमें लगता है कि विरह में परमार्थ के लिए कोई स्थान नहीं है। तुम कृष्ण जी के मित्र हो और उनके विशेष सेवक होने के कारण निरंतर उनके निकट रहते हो फिर भी उनके मंतव्य को भलीभांति जान नहीं पाए हो। तुम्हारा निर्गुण ब्रह्म का उपदेश वैसा ही निष्फल है जैसा किसी डूबते हुए व्यक्ति को यह सलाह देना कि वह जल के झागों को पकड़कर स्वयं को बचा ले।

हम उस कृष्ण के लालित्यपूर्ण मनोहर अति सुंदर मुख को मन से कैसे विस्मृत कर दें। हम तो तुम्हारे युक्तियां और विविध विधाओं से प्राप्त होने वाली, मुक्ति को कृष्ण जी की मुरली पर न्योछावर करती हैं। जिसके हृदय में श्यामसुंदर वास करते हो, उस हृदय में तुम्हारा निर्गुण ब्रह्म कैसे समा सकता है। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों ने कहा कि श्याम का भजन आराधना

वही त्याग सकता है जो किसी अन्य की ओर आकर्षित हो। हमें तो केवल एक ही से लगाव है। हम एक दूसरे से कोई सरोकार नहीं है। एक के होते हुए दूसरे पर डोरे डालना सात्विक प्रेम का परिचायक नहीं हो सकता। प्रस्तुत कथन में गोपियों की अनन्य भक्ति भावना अभिव्यक्त हुई है। कृष्ण जी के होते हुए किसी दूसरे के प्रति अनुराग का प्रदर्शन कर गोपियां अपने को व्यभिचारी होने का दाग नहीं लगाना चाहती।